नेताजी सुभाष चंद्र बोस

वीर बिड़द सिंह

आजाद हिन्द फौज के पहले राजस्थानी सेनानी

डॉ. डी. के. टकनेत

2025

आईआईएमई, जयपुर

इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड एंट्रप्रन्योरशिप (आईआईएमई)
(राष्ट्रीय स्तर का शोध संस्थान जो भारत सरकार के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय का वैज्ञानिक एवं औद्योगिक शोध संगठन है)
आईआईएमई, गेट नं 1, लक्ष्मीनारायण मंदिर, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004
मोबाइल नं. : 9799398502/05, दूरभाष : 0141-2620111
ईमेल : iime.jaipur@gmail.com, वेबसाइट : www.iimejaipur.org

प्रथम संस्करण : 2025
आईएसबीएन : 978-93-340-0911-8

लेखन
डॉ. डी. के. टकनेत

संपादन
रामानंद राठी
अशोक भारतीय
गोविन्द सिंह नेगी

वरिष्ठ शोध सहयोग
किशोर सिंह
देवांग
गिरीश राठौड़
रिया शर्मा
वंदना सोनी

चित्रांकन
गोपाल स्वामी खेतांची
धर्मपाल
चंद्रप्रकाश गुप्ता

छायांकन
मिशेल बेंगुइन
ड्यैडी वॉन शेवॉन
राज चौहान
त्रिलोकचंद महावर
डिनोदिया फोटो लाइब्रेरी

तकनीकी सहयोग व डिजाइन
किशन चंद

कार्यालय समन्वयन :
छोटेलाल महावर

भारत में मुद्रण
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली

यह शोध अध्ययन आईआईएमई, जयपुर द्वारा किया गया है, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय का एक वैज्ञानिक व औद्योगिक शोध संगठन है। जिसे भारत व राजस्थान के *राजपत्र* में अधिसूचित किया गया है। इस पुस्तक से अर्जित आय राजस्थान तथा सामाजिक विज्ञान की शोध परियोजनाओं पर व्यय की जाएगी, जिसका किसी भी व्यक्ति द्वारा निजी लाभ के लिए उपयोग नहीं किया जाएगा। साथ ही इसकी बिक्री व्यापार के माध्यम से या अन्य किसी प्रकार से यथा – उधार, पुनर्विक्रय या किराये पर नहीं की जाएगी या अन्य किसी व्यक्ति/संस्था के द्वारा प्रकाशक की पूर्व–लिखित सहमति के बिना किसी अन्य रूप में प्रयोग नहीं की जाएगी। इस प्रकाशन का कोई भी अंश पुन: प्रकाशन, संग्रहण या मुद्रण में नहीं लिया जा सकता एवं न ही किसी भी अन्य रूप में यह किसी माध्यम से प्रेषित किया जा सकता है। साथ ही बिना पूर्व–लिखित अनुमति के इसे इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य माध्यमों से प्रचारित–प्रसारित नहीं किया जाएगा।

समर्पण

देवभूमि
राजस्थान के
रणबांकुरे अमर शहीदों
एवं आजाद हिन्द फौज में
सम्मिलित होने वाले राजस्थान के पहले
सेनानी वीर बिड़द सिंह को समर्पित। इन्होंने
न केवल भारत माता की स्वतंत्रता हेतु अपने प्राणों का
बलिदान देकर संपूर्ण राष्ट्र को आलोकित किया अपितु युगपुरुष
के रूप में शाश्वत प्रेरणा-पुंज बनकर एक उत्कृष्ट आदर्श भी
स्थापित किया। इनसे प्रेरित होकर वर्तमान एवं भावी पीढ़ी
के असंख्य युवा सेनानी उनके द्वारा प्रशस्त
इस मार्ग पर कदम-से-कदम
मिलाकर अनवरत रूप से
आज भी अग्रसर
हो रहे हैं।

विषय–सूची

दो शब्द

11

शुभकामना संदेश

13–25

प्राक्कथन

26

1. मरुभूमि की उपज : साहसिकता

28

2. शेखावाटी के शहीद व सेठ

40

3. टकनेतों का गौरवशाली इतिहास

60

4. वीरों की देवभूमि : बानूड़ा

78

5. वीर बिड़द सिंह का महान बलिदान

104

6. परिवार की संघर्षगाथा

124

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के कुछ अनमोल विचार

152

चयनित ग्रंथसूची

154

महाराणा प्रताप, मेवाड़

सत्यमेव जयते

दो शब्द

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आईआईएमई, जयपुर द्वारा आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होने वाले पहले राजस्थानी सेनानी स्व. बिड़द सिंह के जीवन–आलोक में राजस्थान व शेखावाटी के रणबांकुरों पर आधारित कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजस्थान वीरों तथा वीरांगनाओं की धरा है। यहां का इतिहास साहस व शौर्यगाथाओं से ओत–प्रोत है। राजस्थान के शूरवीर तथा साहसी सेनानियों ने मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व ही अर्पण नहीं किया, अपितु विरल कीर्तिगाथाओं से भी यहां की धरा को सदैव गौरवान्वित किया है। राजस्थान के बारे में इंग्लैंड के विख्यात कवि किप्लिंग ने ठीक ही लिखा है कि यदि विश्व में कोई ऐसा स्थान है, जहां वीरों की अस्थियां मार्ग की धूल बनी हैं तो वह राजस्थान है। यहां का चप्पा–चप्पा वीरगाथाओं से भरा पड़ा है। यह सत्य है कि राजस्थान वीर योद्धाओं, महान शासकों एवं कर्मठ उद्यमियों की जन्मदात्री है। शेखावाटी वीरों की तपोभूमि है तो लक्ष्मीपुत्रों की भी यह विरल धरा रही है।

यह अत्यंत सुखद विषय है कि देवभूमि राजस्थान के रणबांकुरों तथा महान स्वतंत्रता सेनानियों के आलोक में आपका संस्थान कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन वीर बिड़द सिंह के संदर्भ में कर रहा है। इसमें टकनेत राजपूतों के इतिहास के साथ शेखावाटी की गौरव धरा, वीरों के स्मारकों, देवरों, देवलियों, ठाणों आदि संस्कृति से जुड़ी विशेषताओं का भी सांगोपांग विवरण आपने दिया है।

राजपूताना राइफल में हवलदार लेफ्टिनेंट के रूप में भर्ती हुए वीर बिड़द सिंह आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होने वाले पहले राजस्थानी थे। आजाद हिन्द फौज को आर्थिक सहयोग दिलवाने हेतु गठित 'नेताजी फंड' समिति में भी उनकी मुख्य भूमिका रही। ऐसे वीर स्वाधीनता सेनानी के जीवन आलोक के साथ आपकी इस कॉफी टेबल बुक में शेखावाटी के इतिहास, वहां के सैनिक प्रवासियों से जुड़ी जानकारियों का मनोरम शब्द–चित्रण एवं मोहक छायांकन है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यह कॉफी टेबल बुक राजस्थान के गरिमामय अतीत, यहां की संस्कृति तथा स्वाधीनता से जुड़े उज्ज्वल इतिहास के साथ वीर बिड़द सिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करेगी एवं पाठकोपयोगी भी सिद्ध होगी।

कलराज मिश्र

(कलराज मिश्र)

राज्यपाल, राजस्थान

महाराणा कुंभा, मेवाड़

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

भारत में राजपूताना के नाम से विख्यात राजस्थान के शेखावाटी अंचल का इतिहास पांच हजार वर्षों पुराना है। यह सदा से सतत वीरता, कर्म, त्याग तथा बलिदान की धरा रही है। देश तथा दुनिया के कोने–कोने में मौजूद यहां के प्रवासियों ने अपने सुकृत्यों से शेखावाटी का मान बढ़ाया है। सीमित जल के उपरांत यहां के भूमिपुत्र अपने पसीने की रजत बूंदों से भूमि को सींचकर भरपूर अन्न उपजाते हैं। शेखावाटी के निवासियों ने इस भूमि का अपने कठोर श्रम एवं बलिदान से ऋण उतारने का पूर्ण प्रयास किया है। यहां के सेठों ने भी अपनी व्यापारिक सूझबूझ तथा अथक परिश्रम से धनार्जन के साथ ही उसे समय–समय पर समाज–हित में समर्पित किया है। अन्नदाताओं, सेठों एवं सैनिकों की यह तिकड़ी आज भी अंचल के मस्तक को कृतार्थ करने में तन, मन तथा धन से संलग्न है।

जुझारू योद्धाओं के लिए विख्यात इस मरुधरा पर ऐसे अनेक वीर जन्मे हैं, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा में प्राणोत्सर्ग को अपना अहोभाग्य माना। यहां के वीर बिड़द सिंह के संघर्ष व बलिदान की एक अविस्मरणीय शौर्यगाथा है। राजपूताना राइफल्स से अपना सैन्य जीवन आरंभ करने वाले बिड़द सिंह नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हुए थे। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध बर्मा व अनेक निकटवर्ती मोर्चों पर अपने साथी सैनिकों के साथ लड़ाइयां लड़ीं तथा शत्रु सैनिकों को लगातार परास्त करते हुए अंततः स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हो गये।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शेखावाटी के टकनेतों के मौखिक व लिखित रूप में उपलब्ध इतिहास को एक स्थान पर संगृहीत एवं लिपिबद्ध कर पुस्तक का आकार दिया गया है। मैं इस पुस्तक के लेखक को साधुवाद देता हूं, जिन्होंने टकनेतों के इतिहास को चिरस्थायी बनाने हेतु सार्थक पहल की है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक नवीन पीढ़ी को देशसेवा के लिए सदैव प्रेरित करती रहेगी।

(भजन लाल शर्मा)

मुख्यमंत्री, राजस्थान

वीर दुर्गादास राठौड़, मारवाड़

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

राजस्थान का शेखावाटी अंचल अदम्य शौर्य, साहस, वीरता तथा बलिदान की वीरधरा है। यहां के प्रवासियों ने सदैव ही देश–दुनिया में शेखावाटी का मान, सम्मान और स्वाभिमान बढ़ाया। ऋषि–मुनियों की तपोभूमि के साथ ही यह पावन धरा हमारे अन्नदाताओं की भी कर्मभूमि है।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि प्रस्तुत पुस्तक में शेखावाटी के इतिहास, यहां के सैनिकों, प्रवासियों व आजाद हिन्द फौज के सब–ऑफिसर बिड़द सिंह के कृतित्व को यथार्थ रूप से उजागर करने का सार्थक प्रयास किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक नई पीढ़ी को देशसेवा के लिए सदैव प्रेरित करती रहेगी।

(कर्नल राज्यवर्धन राठौड़, एवीएसएम)
कैबिनेट मंत्री, राजस्थान
उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
सूचना एवं प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग
युवा मामले और खेल विभाग
कौशल नियोजन एवं उद्यमिता विभाग
सैनिक कल्याण विभाग
राजस्थान सरकार

महाराजा सूरजमल, भरतपुर

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

राजस्थान की वीरभूमि शेखावाटी की स्थापना महाराव शेखाजी एवं उनके वंशजों के बल, विक्रम, शौर्य और अद्वितीय प्रतिभा का प्रतिफल है जो शहीदों, सेनानियों, सेठों व किसानों के तप व त्याग के लिए जानी जाती रही है। संगीत, साहित्य, स्थापत्य एवं अन्य कलाओं का भी रेत के इन धोरों के बीच निर्मल झरना बहता रहा है। यह वीरभूमि अपने शौर्य व पराक्रम में सदैव अग्रणी रही है। यहां के रणबांकुरों की अद्वितीय वीरता और बलिदान अपने आप में अनुपम हैं। आज भी इस क्षेत्र के सर्वाधिक सेनानी विभिन्न सेनाओं में भर्ती होकर नये–नये कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। युद्धभूमि में ही नहीं, उद्योग–व्यापार की कर्मभूमि में भी यहां के साहसी पुत्रों ने अपनी व्यापारिक सूझबूझ तथा बुद्धि–चातुर्य से धन अर्जित कर अपनी कीर्ति–पताका फहराई है। इस अंचल के कर्मवीर सेठों का साहस और इन सबसे बढ़कर उपार्जित धन को देश व समाज–हित में पुनः समर्पित करने की विरासत इन्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई, जिसके लिए वे आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाने जाते हैं।

महाराव शेखाजी के ज्येष्ठ पुत्र दुर्गाजी के वंशज टकनेत कहलाए, जिनका संबंध गढ़ टकनेत गांव से रहा। इनके बारे में इतिहास में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। टकनेत राजपूतों का इतिहास अत्यंत वीरतापूर्ण एवं गौरवशाली होने के साथ इनके वैभव की ख्याति दूर–दूर तक फैली है। शेखावाटी की संस्कृति तथा इसकी विशिष्टताओं में मुख्य योगदान देते हुए इन वीर सपूतों ने इस भूमि को रक्त से सींचा है तथा इसकी रक्षा के लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुतियां तक दी हैं। शेखावाटी के टकनेतों में अनेक जुझार हुए हैं जो टकनेतों की वीर संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। राजस्थान के अनेक गांवों में स्थित टकनेत वीरों के स्मारकों, जुझारों के देवरों, सतियों एवं महासतियों की देवलियों, थानों व सुंदर भित्तिचित्रों से सुसज्जित तथा आकर्षक छतरियों से उनके बलिदान की जानकारी पाकर देश के साथ–साथ विदेशी विद्वान भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते हैं।

शेखावाटी के एक ऐसे ही वीर बिड़द सिंह टकनेत आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने वाले राजस्थान के पहले सेनानी बने। उन्होंने शेखावाटी के सैंकड़ों सेनानियों को आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया और अंग्रेजों के विरुद्ध अनेक मोर्चों पर युद्ध कर उन्हें पराजित किया। इसके लिए नेताजी सुभाष चंद्र बोस व आजाद हिन्द फौज के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी उनकी प्रशंसा की। फौज में जब धनाभाव हुआ तो स्वयं के व्यक्तिगत संबंधों के बल पर उन्होंने बर्मा के मारवाड़ियों से बड़ी धनराशि आजाद हिन्द फौज के लिए सहयोग के रूप में दिलाई। बर्मा के अराकान, मांडले व पेमना मोर्चों पर अंग्रेजों के विरुद्ध एक माह तक निरंतर लडते हुए सैनिकों, संसाधनों व युद्ध–सामग्री का नितांत अभाव हो जाने के उपरांत भी वीर बिड़द सिंह मोर्चे पर डटे रहे और अपने बचे–खुचे साथियों के साथ अंग्रेजों पर जोरदार धावा बोलकर कई अंग्रेज सैनिकों को मौत के घाट उतारने के पश्चात् स्वयं भी मातृभूमि के लिए शहीद हो गये। एक प्रकाश–पुंज की भांति वह धरती पर रोशनी बिखेरकर शून्य में अंतर्ध्यान हो गये। एक पुरुषार्थी अपनी सारी थाती तथा अद्वितीय पराक्रम की कीर्ति को सदा–सदा के लिए छोड़कर चिर अनंत में विलीन हो गया।

यह शोधपूर्ण ग्रंथ अनेकानेक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है, जिसमें राजस्थान के वीर सेनानियों, साहसी मारवाड़ियों तथा किसानों के महत्त्वपूर्ण बहुमुखी योगदान को मनमोहक चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसके लिए मैं लेखक को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूं और आशा करता हूं कि यह कॉफी टेबल बुक वर्तमान पीढ़ी के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी और उनमें नवचेतना, उत्साह एवं देश पर समर्पित होने की भावना का संचार करेगी।

(प्रेम सिंह बाजौर)
अध्यक्ष
राज्य सैनिक कल्याण सलाहकार समिति
राजस्थान सरकार

वीरवर पाबूजी राठौड़ (लोकदेवता), कोलू

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

राजस्थान का शेखावाटी अंचल अदम्य साहस, वीरता, कर्म, त्याग एवं बलिदान की भूमि है। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण यहां के प्रत्येक गांव, शहर में मिलते हैं। देश तथा विश्व के कोने–कोने में विद्यमान यहां के प्रवासियों ने अपने कर्म से शेखावाटी का मान–सम्मान बढ़ाया है। यहां के सेठों ने भी अपनी व्यापारिक सूझबूझ तथा परिश्रम से धनार्जन के साथ ही उसे विशेष अवसरों पर समाज–हित में समर्पित किया है। अन्नदाताओं, सेठों एवं सैनिकों की यह तिकड़ी आज भी अंचल के मस्तक को ऊंचा करने में तन, मन तथा धन से संलग्न है। यहां के वीर बिड़द सिंह के संघर्ष व शहादत की शौर्यगाथा अविस्मरणीय है। राजपूताना राइफल्स से अपना सैन्य जीवन आरंभ करने वाले बिड़द सिंह नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज के वीर सेनानी थे। वह अंग्रेजों के विरुद्ध बर्मा व उसके आस–पास के अनेक मोर्चों पर अपने साथी सैनिकों के साथ युद्ध लड़कर अतुल्य पराक्रम का परिचय देते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शेखावाटी के टकनेतों के लिखित रूप में उपलब्ध व मौखिक इतिहास को एक जगह संगृहीत तथा लिपिबद्ध कर पुस्तक का आकार दिया जा रहा है, जो अनुकरणीय एवं सराहनीय है। इस पुस्तक के माध्यम से जनसाधारण को टकनेतों के इतिहास व अन्य पहलुओं को समझने में सहायता मिलेगी। यह पुस्तक टकनेतों व शेखावाटी के वीरगति प्राप्त सेनानियों के शौर्य को चिरस्थायी बनाने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी व युवा पीढ़ी को देशसेवा हेतु प्रेरित करती रहेगी, ऐसा मेरा मानना है।

प्रकाशित होने वाली पुस्तक व इसमें निहित उद्देश्यों की सफलता हेतु मैं साधुवाद एवं हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(सुमेधानंद सरस्वती)
लोकसभा सदस्य, सीकर
सदस्य : रेल संबंधी स्थायी समिति
आचार संबंधी स्थायी समिति
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की परामर्शदात्री समिति
संस्कृति मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति
भारत सरकार

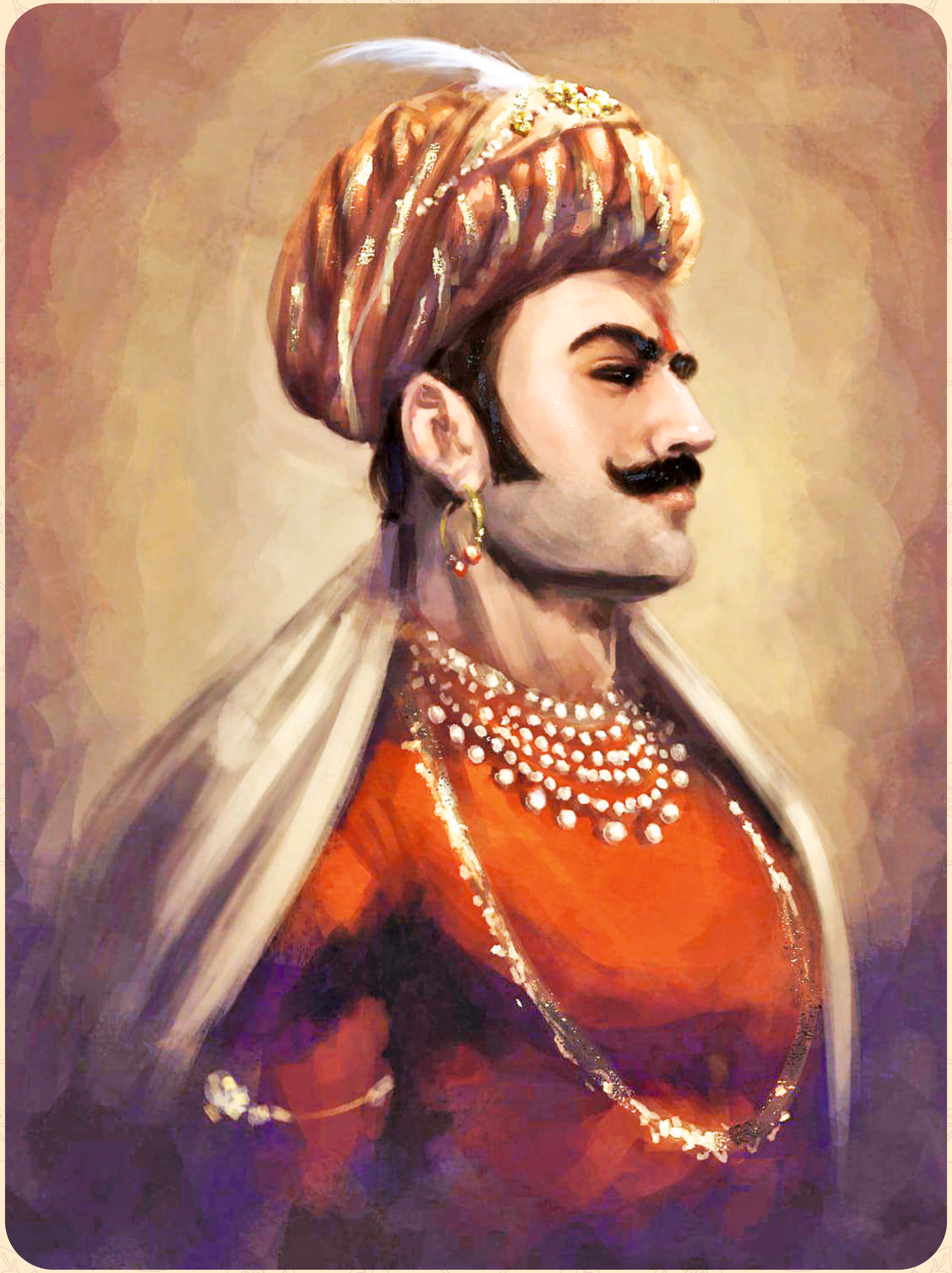

पृथ्वीराज चौहान, अजमेर

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

राजस्थान के शेखावाटी अंचल का इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि यह धरा अदम्य साहस, कर्म, त्याग और बलिदान की जननी रही है। जो भी व्यक्ति यहां से प्रवसित हुआ, उसने अपने सुकर्मों तथा बलिदान के द्वारा शेखावाटी का मान बढ़ाया। यहां के धन कुबेरों ने भी अपनी व्यापारिक सूझबूझ, बुद्धि–चातुर्य तथा घोर परिश्रम से धन अर्जित करने के साथ उसे समाज–हित में समर्पित करने में भी रंचमात्र संकोच नहीं किया। इनमें से कुछ तो इतने सक्षम हैं कि देश की विभिन्न राज्य सरकारों के साथ–साथ विदेशी सरकारों को भी उनके देश में उद्यमों को प्रोत्साहन देने के लिए समय–समय पर आर्थिक संबल देते रहे हैं। वीरवर दुर्गाजी शेखावाटी के प्रवर्तक महाराव शेखाजी के ज्येष्ठ पुत्र थे, जिनके वंशज आगे चलकर 'टकनेत' कहलाए। यद्यपि इनके बारे में इतिहास में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है, परन्तु पुस्तक में टकनेतों के मौखिक व लिखित रूप में उपलब्ध इतिहास को एक स्थान पर संगृहीत कर, लिपिबद्ध करने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। इसमें लेखक की लगन व उनका अथक परिश्रम स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

इसी गौरवशाली टकनेत वंश में एक सपूत थे– वीर बिड़द सिंह। राजपूताना राइफल्स से अपना सैन्य जीवन आरंभ करने वाले बिड़द सिंह आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने वाले पहले राजस्थानी सैनिक थे। उनका अथक संघर्ष व त्याग स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की एक अविस्मरणीय शौर्यगाथा है। देश को आजाद कराने के लिए स्वयं को होम कर देने की हार्दिक इच्छा के कारण बिड़द सिंह ने शेखावाटी अंचल के सैकड़ों सेनानियों को मां भारती को स्वतंत्र करवाने के लिए प्रेरित कर सेना में भर्ती कराया। सब–ऑफिसर बिड़द सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध बर्मा व उसके आस–पास के अनेक मोर्चों पर अपने साथी सैनिकों के साथ लड़ाइयां लड़ते हुए शत्रु को लगातार पराजित किया। इस वीरतापूर्ण कार्य के लिए न केवल आजाद हिन्द फौज के वरिष्ठ अधिकारियों अपितु स्वयं नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने उनकी साहसिकता, युद्धनीति व मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पित करने की प्रबल इच्छा व देशभक्ति की भावना को मुक्तकंठ से सराहा।

एक समय ऐसा भी आया जब बर्मा के अराकान, मांडले व पेमना मोर्चों पर अंग्रेज सेना के विरुद्ध लगातार लड़ते हुए सैनिक साथियों के साथ संसाधनों व युद्ध–सामग्री का अत्यंत अभाव हो गया था। परन्तु देशभक्ति की भावना व शौर्य के बल पर बिड़द सिंह ऐसी घोर विषम परिस्थितियों में अपनी अंतिम सांस तक डटे रहे। शेष बचे हुए सीमित सैनिक साथियों के साथ एक बार पुनः उन्होंने शत्रु सैनिकों पर धावा बोल दिया। भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें सैंकड़ों अंग्रेज शत्रुओं के प्राण हरने के पश्चात् वह स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हो गये। देश–रक्षार्थ स्वयं को न्यौछावर करने वाले वीर बिड़द सिंह को नमन करते हुए मैं इस पुस्तक के लेखक को सच्चे हृदय से साधुवाद देता हूं, जिन्होंने उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए एक सार्थक पहल की।

(गोरधन वर्मा)

विधायक, धोद, सीकर

रानी कर्णावती, मेवाड़

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

राजस्थान की वीरभूमि अपने शौर्य, बलिदान व स्वामिभक्ति के लिए सदा–से जानी जाती रही है। संगीत, साहित्य, स्थापत्य एवं अन्य कलाओं का भी रेत के इन धोरों के बीच निर्मल झरना बहता रहा है। यह वीरभूमि अपने शौर्य में सदा अग्रणी रही है। यहां के रणबांकुरों का अद्वितीय पराक्रम तथा बलिदान अपने आप में अनुपम है, जिन्होंने शताब्दियों से इस देवभूमि की बर्बर अक्रांताओं से रक्षा की है। राजस्थान का ही एक अभिन्न अंग है – शेखावाटी, जो साहसी योद्धाओं, महान शासकों, कर्मठ उद्यमियों का जन्मदाता रहा है। इस क्षेत्र के सीकर व झुंझुनूं जिलों से सर्वाधिक संख्या में सैनिक भारतीय सेना में हैं। थलसेना में चयनित होने वाले कुल सैनिकों में से एक चौथाई इन्हीं जिलों से होते हैं, जिनमें महिलाओं की संख्या भी कम नहीं है। जल, थल तथा वायु तीनों सेनाओं में कार्यरत इन सैनिकों को अदम्य साहस एवं अतुलनीय वीरता के लिए समय–समय पर अनेक प्रतिष्ठित उच्च पदकों से सम्मानित किया गया है। शेखावाटी के मारवाड़ी समाज की जड़ें भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तंत्र में अत्यधिक गहराई तक फैली हुई हैं। देश के सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों के साथ–साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भी इस समाज की आहुतियां उल्लेखनीय रही हैं। वे आज देश में उद्योग, व्यापार तथा कला–कौशल के प्रेरक–प्रतीक बन गये हैं।

शेखावाटी के प्रवर्तक एवं प्रथम पुरुष महाराव शेखाजी के सबसे ज्येष्ठ पुत्र दुर्गाजी थे, जिनके वंशज टकनेत कहलाए। इसी टकनेत वंश के वीर बिड़द सिंह आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने वाले पहले राजस्थान सेनानी थे। बाद में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होने के इच्छुक नौजवानों की भर्ती एवं प्रशिक्षण का कार्य भी उन्हीं की देख–रेख में हुआ। कालांतर में आजाद हिन्द फौज के लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था करने में बिड़द सिंह ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बर्मा के अराकान, मांडले व पेमना मोर्चों पर अंग्रेजों के विरुद्ध एक माह तक निरंतर युद्ध करते हुए सैनिकों, संसाधनों व युद्ध–सामग्री का अत्यधिक अभाव हो जाने के बावजूद भी वीर बिड़द सिंह मोर्चे पर अविचलित रूप से डटे रहे। तदुपरांत फौज के बचे हुए साथियों के साथ अंग्रेज शत्रुओं पर जोरदार धावा बोलकर कई अंग्रेज सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया तथा अंतत: स्वयं भी मातृभूमि की गोद में चिरनिद्रा में सो गये। उनका अतुल्य साहस, संघर्ष व बलिदान स्वतंत्रता संग्राम की एक विशिष्ट गाथा है।

यह कॉफी टेबल बुक अनेकानेक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित शोधपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें राजस्थान के वीर सेनानियों तथा साहसी मारवाड़ियों व किसानों के बहुमुखी योगदान को मनमोहक चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। आज वीर सेनानी बिड़द सिंह अपने देशप्रेम, व्यक्तित्व व कृतित्व के कारण भौगोलिक क्षेत्र एंव समाज की सीमाओं को लांघकर भारत के लोगों के लिए एक पुरोधा बन गये हैं। यह केवल मात्रभूमि की रक्षार्थ प्राण न्यौछावर करने वाले शहीद की एकल गाथा न होकर मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत एक खोजपूर्ण संग्रहणीय ऐतिहासिक दस्तावेज भी है। लेखक द्वारा रचित गौरवशाली ग्रंथ वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होने के साथ–साथ उनमें नवचेतना, उत्साह एवं देश पर समर्पित होने के भाव का संचार करेगा।

Gayatri

(गायत्री कंवर)
जिला प्रमुख
जिला परिषद, सीकर

रानी पद्मावती, चित्तौड़

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

राजस्थान प्रदेश को राजपूत योद्धाओं तथा कर्मठ उद्यमियों की अमूल्य धरा होने के कारण राजपूताना के नाम से भी संबोधित किया जाता था। यहां के शूरवीर योद्धा अपने पराक्रम, शौर्य, साहस, बलिदान एवं स्वामिभक्ति के लिए सदैव जगविख्यात रहे हैं। यहां के रणबांकुरों एवं जुझारों ने शताब्दियों से प्राणों की बाजी लगाकर अपनी मातृभूमि की विदेशी आक्रमणकारियों से रक्षा की है। इसी वीरभूमि राजस्थान का शेखावाटी अंचल, जिसकी स्थापना शेखावत वंश के आदि पुरुष महाराव शेखाजी द्वारा की गई, जहां पर पांच सौ वर्षों से भी अधिक समय तक शेखावत राजपूतों ने शासन किया। वीरवर शेखाजी के सबसे ज्येष्ठ पुत्र दुर्गाजी हुए, जिनके वंशज टकनेत कहलाए।

स्वतंत्रता संग्राम में भी टकनेत वंशजों का अति विशिष्ट एवं उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसी शृंखला में, वीर बिड़द सिंह ने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व के द्वारा वंश का नाम रोशन किया तथा राजस्थान की मरुभूमि का मस्तक ऊंचा किया। कालांतर में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होने के इच्छुक नौजवानों की भर्ती एवं प्रशिक्षण का कार्य भी उन्हीं की देख–रेख में हुए। वह राजपूताना राइफल्स के अत्यंत प्रशिक्षित एवं दक्ष मेजर हवलदार थे। आगे चलकर वह मातृभूमि की सेवा हेतु अपनी नौकरी को त्यागकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस के कुशल नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने वाले पहले राजस्थानी सेनानी बने। अपने दायित्वों का भली भांति निर्वहन करते हुए उन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अनेक युद्धों में अपने रण–कौशल का प्रदर्शन किया। फिर वह समय भी आया जब बर्मा के अराकान, मांडले व पेमना मोर्चों पर अंग्रेजों के विरुद्ध एक माह तक निरंतर युद्ध करते हुए सैनिकों, संसाधनों व युद्ध–सामग्री का अत्यधिक अभाव हो जाने के उपरांत भी वीर बिड़द सिंह अपनी देशभक्ति व उत्साह के बलबूते मोर्चे पर अविचलित रूप से डटे रहे। फौज के बचे हुए साथियों के साथ फिर से उन्होंने अंग्रेज शत्रुओं पर जोरदार धावा बोलकर अंग्रेज सेना के सैंकड़ों सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया तथा अंततः स्वयं भी मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने प्राण समर्पित कर सदा के लिए अनंत आकाश में विलीन हो गये।

ऐसे महान सत्पुरुषों की यशोगाथा आज समूचे मानव–समाज के लिए देशप्रेम एवं साहस का एक अनूठा उदाहरण बन गई है। इस कॉफी टेबल बुक में लेखक द्वारा रचनात्मक कला–शैली, उत्कृष्ट लेखन, मनमोहक पेंटिंग्स, छायाचित्रों एवं नक्शों का यथास्थान प्रयोग करने से प्रस्तुतीकरण अत्यंत ही सुसज्जित एवं शानदार लग रहा है। इस ऐतिहासिक ग्रंथ में किये गये कठोर श्रम की सराहना करते हुए यह आशा करते हैं कि इससे वर्तमान व भावी पीढ़ी में एक नवीन चेतना, उत्साह एवं देश पर समर्पित होने की भावना का संचार होगा।

गेंद कंवर

(गेंद कंवर)

प्रधान, पंचायत समिति

दांतारामगढ़, सीकर

प्राक्कथन

भारत के विशाल भूभाग वाले आकर्षक राज्यों में से एक है – 'राजस्थान', जो शताब्दियों पुरानी बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत को अपने आप में सहेजे हुए है। यहां के निवासी अपनी वीरता, शौर्य, साहस व आतिथ्य के लिए विश्वविख्यात हैं। इसकी प्राकृतिक धरोहर अत्यंत समृद्ध होने के साथ–साथ यहां की वेशभूषा, परंपरा, रीति–रिवाज एवं लोककला भी अपने आप में अनूठी एवं अतुल्य है। एक ओर जहां विश्व की प्राचीनतम पर्वतमाला, अरावली की पहाड़ियां यहां सुशोभित हैं, तो दूसरी ओर सुनहरी बालू रेत के टीले, थार के रेतीले रेगिस्तान में चारों ओर दूर–दूर तक विस्तार पाते दिखाई देते हैं। इस प्रदेश को राजपूत योद्धाओं तथा उद्यमियों की अमूल्य धरा के रूप में भी जाना जाता है। मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले राजस्थानी सपूतों की शौर्यगाथाएं वैश्विक जनसमुदाय को आज भी रोमांचित करती हैं।

इसी राजस्थान का एक अभिन्न अंग है – शेखावाटी। आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व आचार्य पाणिनि के समय इसका पश्चिमोत्तरी भाग जांगल देश एवं पूर्वी व दक्षिण–पूर्वी भाग मत्स्य जनपद का एक भाग माना जाता था। इस प्रकार आज का शेखावाटी जनपदीय युग में मत्स्य तथा साल्व नाम के दो जनपदों में विभाजित था। इसकी स्थापना शेखावत वंश के आदिपुरुष महाराव शेखाजी एवं उनके वंशजों के अद्वितीय पराक्रम एवं शौर्य का ही परिणाम है। पांच सौ वर्षों से अधिक समय तक शेखावत राजपूतों द्वारा शासित शेखावाटी की गौरवभूमि देश–विदेश में अनेकानेक कारणों से विख्यात रही है। सर्वप्रथम वि.सं. 1736 में इस भूभाग के लिए 'शेखावाटी' शब्द का प्रयोग हुआ। बांकीदास के समकालीन कर्नल डब्ल्यू. एल. गार्डनर ने भी सन् 1803 में शेखावाटी शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद कर्नल जेम्स टॉड ने सर्वप्रथम शेखावाटी का क्रमबद्ध इतिहास लिखा, जिसमें शेखावतों का विस्तृत वर्णन है। इसमें सूर्य व चंद्रवंशी छत्तीस राजपूत वंशों का उल्लेख है। इनमें कछवाहा कुल सूर्यवंशी है, जिसके वंशज शेखावतों के रूप में जाने जाते हैं।

इस कॉफी टेबल बुक में राजस्थान के रणबांकुरों व शेखावाटी क्षेत्र का अतिरोचक शैली में वर्णन किया गया है, जो आज अपने शौर्य, शिक्षा, साहित्य व कला–संस्कृति के लिए सुविख्यात है। शेखावाटी के भित्तिचित्रों ने भी इस क्षेत्र की विश्व में अपनी एक विशिष्ट छवि बनाई है। यही कारण है कि आज शेखावाटी 'ओपन आर्ट गैलेरी' के रूप में भी जानी जाती है। भारत के किसी भी अन्य क्षेत्र की अपेक्षा सर्वाधिक सैनिक देशसेवा हेतु समर्पित करने वाला शेखावाटी क्षेत्र आज अपनी आन–बान एवं मर्यादा के सजग प्रहरी शूरवीरों के रक्त से सिंचित एक वटवृक्ष के रूप में झूमता हुआ यहां की अमरगाथा कह रहा है। यहां की धरा वीर योद्धाओं, महान शासकों और कर्मठ उद्यमियों की जन्मदात्री रही है। यही कारण है कि पाश्चात्य विद्वानों ने शेखावाटी को राजस्थान का 'स्कॉटलैंड' कहकर संबोधित किया है। भारतीय सेना में सर्वाधिक संख्या में सैनिक शेखावाटी के सीकर एवं झुंझुनूं जिलों से आते हैं। जल, थल व नभ तीनों सेनाओं में कार्यरत इन सैनिकों को अदम्य साहस एवं वीरता के पुरस्कारस्वरूप समय–समय पर अनेक उच्च पदकों से अलंकृत किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में शेखावाटी के रणबांकुरों की अद्वितीय शूरवीरता के साथ–साथ यहां के सेठों की गौरवगाथाओं का भी वर्णन किया गया है। व्यापारिक सूझबूझ तथा बुद्धि–चातुर्य से धन अर्जित कर देश व समाज को उसे पुन: समर्पित करने के अपने जन्मजात स्वभाव के कारण वे जनकल्याण के कार्यक्रमों में खुलकर आर्थिक योगदान देते रहे हैं। उनका परमार्थ भाव, राष्ट्रप्रेम तथा भारत मां की स्वतंत्रता के लिए जेल जाने से लेकर फाँसी के फंदे पर झूलने तक की ऐतिहासिकरोमांचकारी यात्रा, अत्यंत ही प्रेरणादायक एवं अनुसरणीय है।

शेखावाटी के टकनेतों का इतिहास वीरतापूर्ण एवं गौरवशाली रहा है। प्रथम विश्वयुद्ध हो या स्वतंत्रता संग्राम या फिर भारत–पाक युद्ध, टकनेतों ने अभूतपूर्व वीरता का प्रदर्शन किया है; परन्तु यह विडंबना ही है कि इतिहास–सम्मत पर्याप्त सूचनाओं एवं वंशावली के अभाव में लोगों को इनके बारे में बहुत कम जानकारी है। शेखावाटी के प्रवर्तक महाराव शेखाजी की छह रानियों से बारह पुत्र तथा तीन पुत्रियां हुई थीं। इनके ज्येष्ठ पुत्र वीरवर दुर्गाजी के वंशज दुर्गावत न कहलाकर मातृपक्ष के अनुसार महाराव शेखाजी की ज्येष्ठ रानी टांकणजी के नाम से 'टकनेत' कहलाए। इनका उद्भव सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील के 'गढ़ टकनेत' गांव से हुआ। यहां से प्रवासित होकर टकनेत वंश के लोग संपूर्ण राज्य में फैल गये। आज भी शेखावाटी में इनके अनेक ठिकाने हैं, जिनमें गढ़ टकनेत का किला इनके लिए श्रद्धास्थल है। टकनेतों में अनेकानेक रणबांकुरे ऐसे भी हुए हैं, जिनका युद्ध के मैदान में मस्तक कट गया, गले से रक्त की धार छूटती रही, फिर भी मुट्ठी में दृढ़ता से पकड़ी तलवार चलाकर वे शत्रु का सर्वनाश करते रहे। ऐसे दृश्य की कल्पनामात्र से किसी के भी रोंगटे खड़े हो सकते हैं। ऐसे वीरों को स्थानीय भाषा में 'जुझार' कहा जाता है। टकनेत वंश में ऐसे अनेक लोकप्रिय जुझार हुए हैं, जिनकी सुंदर भित्तिचित्रों से सुसज्जित तथा आकर्षक छतरियां व देवलियां शेखावाटी के विभिन्न स्थानों पर देखने को मिलती हैं। वहां पर बालकों के जडूले इत्यादि संस्कार संपन्न किये जाते हैं। इनके अद्भुत पराक्रम के कारण लोग आज भी इन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। इसी के साथ, देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी टकनेत वंशजों का अतिविशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वीर बिड़द सिंह राजपूताना राइफल्स के एक ऐसे ही प्रशिक्षित एवं दक्ष हवलदार मेजर थे। वह मातृभूमि की नि:स्वार्थ सेवा हेतु राजपूताना राइफल्स की नौकरी को त्यागकर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने वाले पहले राजस्थानी सेनानी थे। बाद में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हुए नवयुवाओं की भर्ती और प्रशिक्षण का कार्य भी उन्हीं की देख–रेख में हुआ।

कालांतर में आजाद हिन्द फौज के लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था करने में भी वीर बिड़द सिंह ने विशिष्ट भूमिका अभिनीत की। बर्मा में अधिकांश व्यापारी उस समय मारवाड़ी समाज से थे, बिड़द सिंह की प्रेरणा से उन्होंने 'नेताजी फंड' समिति में उदारतापूर्वक योगदान दिया। उनकी प्रेरणा से हबीब नाम के व्यक्ति ने अपनी संपूर्ण संपत्ति, भूमि, मकान व आभूषण नेताजी को सहर्ष समर्पित कर दिये। नेताजी ने अराकान, मांडले व पेमना मोर्चे के अभियान के लिए आजाद हिन्द फौज के सेनानियों के दल को सब–ऑफिसर बिड़द सिंह के नेतृत्व में रवाना किया, जिन्हें पेमना मोर्चे का उत्तरदायित्व सौंपा गया। वह कई सप्ताह तक इस मोर्चे पर जुटे रहकर कुशल रणनीति के साथ युद्ध करते रहे। इस समय उन्हें न घर व भोजन–पानी की चिंता थी और न ही अपने स्वास्थ्य की। परन्तु धीरे–धीरे अंग्रेज सैनिकों के भारी जत्थे गोला–बारूद के साथ एक के बाद एक आने लगे। ऐसे विकट समय में भी उन्होंने न केवल धैर्य बनाए रखा अपितु देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत होकर अपने साथियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी किया। हथियारों के नाम पर उनके पास अब एकमात्र खाली राइफल व उस पर लगा संगीन ही शेष था, परन्तु फिर भी वह 'भारत माता की जय' का उद्घोष करते हुए वह अपने गिने–चुने साथियों व सीमित संसाधनों के साथ शत्रुओं पर पुन: टूट पड़े।

सब–ऑफिसर बिड़द सिंह राइफल की संगीन से एक–एक अंग्रेज का पेट चीरते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। इस दौरान गोलियों से उनका शरीर छलनी हो गया। अपने जुझारूपन व आत्मबल के बूते पर वह अंग्रेज सैनिकों के हथियारों के असले तक पहुंच गये। घायल होने के उपरांत एक के बाद एक बम फेंककर उन्होंने अंग्रेज सैनिकों की छावनी में भगदड़ मचा दी। वे सब उनकी इस अद्भुत वीरता व पराक्रम को देखकर आतंकित व घोर अचरज में थे। इसी बीच उनमें से एक शत्रु सैनिक ने सहसा पीछे से तलवार से उनका शीश धड़ से अलग कर दिया। फिर भी वह अपनी वंश परंपरा के अनुरूप 'जुझार' बनकर शीशविहीन धड़ से हाथ में राइफल की संगीन थामे, शत्रुओं के लिए साक्षात् काल बने हुए थे। उनके दूसरे हाथ में अंग्रेजों के असले से लिये हुए बम थे, जो उन्होंने उसी असले पर मारकर भीषण विस्फोट के साथ सैंकड़ों अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया। इसी धमाके के बीच भारत मां का वह सच्चा सपूत स्वयं भी मातृभूमि की गोद में सदा के लिए सो गया। अपने प्रकाश से सबको आलोकित करने वाला एक श्रेष्ठ 'जुझार' यूं अमर शहीद के रूप में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर गया। ऐसे वीर सेनानी पर आज प्रत्येक भारतीय को गर्व है।

दूसरी ओर उनकी जन्मभूमि शेखावाटी में वीर बिड़द सिंह के परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत विषम एवं करुणाजनक थी। उनकी पत्नी रामप्यारी देवी अपने तीन बच्चों के साथ जैसे–तैसे एक जर्जर झोंपड़ी में जीवनयापन करने हेतु विवश थी। उनकी गाय भी इसी में बंधती व बछड़ा भी। आजीविका का एकमात्र साधन अनाज पीसने की चक्की भी यहीं रखी रहती थी। खाने–पीने के कुछ पुराने बर्तन, जीर्ण–शीर्ण वस्त्र, मिट्टी का चूल्हा तथा टूटी चारपाई के साथ यह कच्ची झोंपड़ी ही स्वयं उसके एवं बच्चों के रहने का सहारा थी। भोजन में अधिकतर रूखे–सूखे फाके होते या मोठ की रोटी, जो मिर्ची व नमक डालकर पानी के साथ गटकने को मिल पाती थी। अनाज पीसने की चक्की के अतिरिक्त आय का अन्य कोई स्रोत नहीं था। पांच सेर अनाज की पिसाई के बदले में एक पाव मोठ मिलता, जिससे एक रोटी ही बन पाती थी। उसी के चार टुकड़े करके अपनी भूख मिटाने को सभी परिवारजन विवश थे। अन्य आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु गाय का दूध समर्थ लोगों को बेच दिया जाता था। सरकारी अधिकारी शहीद की विधवा को मिलने वाली पेंशन हेतु चक्कर पर चक्कर लगवा रहे थे, जो घोर संघर्ष के बाद मिली। यह इस समूची करुण कथा का एक पृथक् मार्मिक व दु:खद पक्ष रहा।

इस पुस्तक के दो शब्द लिखने के लिए मैं राजस्थान के माननीय राज्यपाल तथा शुभकामना संदेश प्रदान करने वाले महानुभावों का अत्यंत आभारी हूं। साथ ही उन सभी विद्वानों, शेखावत एवं टकनेत परिवार के शुभचिंतकों का धन्यवाद, जिन्होंने अपने पारिवारिक व सामाजिक इतिहास के संबंध में उल्लेखनीय जानकारियां उपलब्ध करवाईं। अनेक रंगीन व श्वेत–श्याम दुर्लभ चित्रों, पेंटिंग्स, लिथोग्राफ्स, मानचित्रों, दस्तावेजों एवं रेखाचित्रों से सुसज्जित 165 पृष्ठों वाली यह पुस्तक शेखावाटी, टकनेत वंश व शहीद बिड़द सिंह के जीवन–चरित्र को लेकर पहली बार प्रकाशित की गई है। देश के प्रति सच्चा समर्पण रखने वाले देशभक्तों को एक अमर शहीद के सर्वोच्च त्याग की यह गौरवगाथा निश्चित ही असीम शक्ति व प्रेरणा प्रदान करेगी, ऐसी मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है।

जयपुर

15 जनवरी, 2025

डॉ. डी. के. टकनेत